

1 Timothy

1 Greetings from Paul, an apostle of Christ Jesus. I am an apostle by the command of God our Savior and Christ Jesus our hope.

²To Timothy, a true son to me in the faith we share. Grace, mercy, and peace from God the Father and Christ Jesus our Lord.

Warnings Against False Teachings

³When I went to Macedonia, I asked you to stay in Ephesus. Some people there are teaching things that are not true, and I want you to tell them to stop. ⁴Tell them not to give their time to meaningless stories and to long lists of names to prove their family histories. Such things only cause arguments. They don't help God's work, which is done only by faith. ⁵My purpose in telling you to do this is to promote love—the kind of love shown by those whose thoughts are pure, who do what they know is right, and whose faith in God is real. ⁶But some have missed this key point in their teaching and have gone off in another direction. Now they talk about things that help no one. ⁷They want to be teachers of the law, but they don't know what they are talking about. They don't even understand the things they say they are sure of. ⁸We know that the law is good if someone uses it right. ⁹We also know that the law is not made for those who do what is right. It is made for those who are against the law and refuse to follow it. The law is for sinners who are against God and all that is pleasing to him. It is for those who have no interest in spiritual things and for those who kill their fathers or mothers or anyone else. ¹⁰It is for those who commit sexual sins, homosexuals, those who sell slaves, those who tell lies, those who don't tell the truth under oath, and those who are against the true teaching of God. ¹¹That teaching is part of the Good News that our blessed God gave me to tell. In it we see his glory.

1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

²तीमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

³मकिदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी शिक्षाएँ देते रहने, ⁴काल्पनिक कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर जो लड़ाई-झगड़ों को बढ़ावा देती हैं और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देती, जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। ⁵इस आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है। ⁶कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं और बेकार के वाद-विवादों में जा फँसे हैं। ⁷वे व्यवस्था के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते। ⁸हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था उत्तम है। ⁹अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्वेगों, विद्रोहियों, अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता-पिता के मार डालने वालों हत्यारों, ¹⁰व्यभिचारियों, समलिंग कामुको, शोषण कर्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा के विरोध में हैं। ¹¹वह शिक्षा परमेश्वर के महिमामय सुसमाचार के अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

Thanks for God's Mercy

¹²I thank Christ Jesus our Lord because he trusted me and gave me this work of serving him. He gives me strength. ¹³In the past I insulted Christ. As a proud and violent man, I persecuted his people. But God gave me mercy because I did not know what I was doing. I did that before I became a believer. ¹⁴But our Lord gave me a full measure of his grace. And with that grace came the faith and love that are in Christ Jesus.

¹⁵Here is a true statement that should be accepted without question: Christ Jesus came into the world to save sinners, and I am the worst of them. ¹⁶But I was given mercy so that in me Christ Jesus could show that he has patience without limit. Christ showed his patience with me, the worst of all sinners. He wanted me to be an example for those who would believe in him and have eternal life. ¹⁷Honor and glory to the King who rules forever. He cannot be destroyed and cannot be seen. Honor and glory forever and ever to the only God. Amen.

¹⁸Timothy, you are like a son to me. What I am telling you to do agrees with the prophecies that were told about you in the past. I want you to remember those prophecies and fight the good fight of faith. ¹⁹Continue to trust in God and do what you know is right. Some people have not done this, and their faith is now in ruins. ²⁰Hymenaeus and Alexander are men like that. I have given them to Satan so that they will learn not to speak against God.

God Wants Us to Pray for Everyone

2 First of all, I ask that you pray for all people. Ask God to bless them and give them what they need. And give thanks. ²You should pray for rulers and for all who have authority. Pray for these leaders so that we can live quiet and peaceful lives—lives full of devotion to God and respect for him. ³This is good and pleases God our Savior.

⁴God wants everyone to be saved and to fully understand the truth. ⁵There is only one God, and there is only one way that people can reach

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

¹²मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वासनीय समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। ¹³यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया ¹⁴और प्रभु का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है।

¹⁵यह कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ। ¹⁶और इसलिए तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे, उनके लिए अनन्त जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता प्रदर्शित कर सके। ¹⁷अब उस अनन्द सम्राट अविनाशी अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान और महिमा होती रहे। आमीन!

¹⁸मेरे पुत्र तीमथियुस, भविष्यवाक्ताओं के वचनों के अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू उनके अनुसार ¹⁹विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। ²⁰हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया है ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ। ²शासकों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें। ³यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है।

⁴वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचाने ⁵क्योंकि परमेश्वर एक ही

God. That way is through Christ Jesus, who as a man ⁶gave himself to pay for everyone to be free. This is the message that was given to us at just the right time. ⁷And I was chosen as an apostle to tell people that message. (I am telling the truth. I am not lying.) I was chosen to teach those who are not Jews to believe and understand the truth.

Special Instructions for Men and Women

⁸I want the men everywhere to pray. Men who lift their hands in prayer must be devoted to God and pleasing to him. They must be men who keep themselves from getting angry and having arguments.

⁹And I want the women to make themselves attractive in the right way. Their clothes should be sensible and appropriate. They should not draw attention to themselves with fancy hairstyles or gold jewelry or pearls or expensive clothes. ¹⁰But they should make themselves attractive by the good things they do. That is more appropriate for women who say they are devoted to God.

¹¹A woman should learn while listening quietly and being completely willing to obey. ¹²I don't allow a woman to teach a man or tell him what to do. She must listen quietly, ¹³because Adam was made first. Eve was made later. ¹⁴Also, Adam was not the one who was tricked. It was the woman who was tricked and became a sinner. ¹⁵But women will be saved in their work of having children. They will be saved if they continue to live in faith, love, and holiness with sensible behavior.

Leaders in the Church

3 It is a true statement that anyone whose goal is to serve as an elder has his heart set on a good work. ²An elder must be such a good man that no one can rightly criticize him. He must be faithful to his wife. He must have self-control and be wise. He must be respected by others. He must be ready to help people by welcoming them into his home. He must be a good teacher. ³He must not drink too much, and he must not be

है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु। ⁶उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर इसकी साक्षी दी। ⁷तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया। (यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी ठहराया गया।

पुरुष एवं महिला के बारे में विशेष निर्देश

⁸इसलिए मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र हाथों को उपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो बिना किसी क्रोध अथवा मन-मुटाव के प्रार्थना करें।

⁹इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे सीधी-साधी वेश-भूषा में शालीनता और आत्म-नियन्त्रण के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिए वे केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें ¹⁰बल्कि ऐसी स्त्रियों को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती है, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम कार्यों से सजायें।

¹¹एक स्त्री को चाहिए कि वह शांत भाव से समग्र समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे। ¹²मैं यह नहीं चाहता कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना चाहिए। ¹³क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और तब पीछे हव्वा को। ¹⁴आदम को बहकाया नहीं जा सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप में पतित हो गयी। ¹⁵किन्तु यदि वे माता के कर्तव्यों को निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे काम की इच्छा रखता है। ²अब देखो उसे एक ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिए। उसे शालीन होना चाहिए, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथिसत्कार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपूण होना चाहिए। ³वह पियक्कड़ नहीं होना चाहिए, न ही उसे झगड़ालू

someone who likes to fight. He must be gentle and peaceful. He must not be someone who loves money. ⁴ He must be a good leader of his own family. This means that his children obey him with full respect. ⁵ If a man does not know how to lead his own family, he will not be able to take care of God's church.

⁶ An elder must not be a new believer. It might make him too proud of himself. Then he would be condemned for his pride the same as the devil was. ⁷ An elder must also have the respect of people who are not part of the church. Then he will not be criticized by others and be caught in the devil's trap.

Special Servants

⁸ In the same way, the men who are chosen to be special servants must have the respect of others. They must not be men who say things they don't mean or who spend their time drinking too much. They must not be men who will do almost anything for money. ⁹ They must follow the true faith that God has now made known to us and always do what they know is right. ¹⁰ You should test them first. Then, if you find that they have done nothing wrong, they can be special servants.

¹¹ In the same way, the women must have the respect of others. They must not be women who speak evil about other people. They must have self-control and be women who can be trusted in everything.

¹² The men who are special servants must be faithful in marriage. They must be good leaders of children and their own families. ¹³ Those who do well as special servants are making an honorable place for themselves. And they will feel very sure of their faith in Christ Jesus.

The Secret of Our Life

¹⁴ I hope I can come to you soon. But I am writing this to you now, ¹⁵ so that, even if I cannot come soon, you will know how people should live in the family of God. That family is the church of the living God. And God's church is the support and foundation of the truth.

होना चाहिए। उसे तो सज्जन तथा शांतिप्रिय होना चाहिए। उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिए। ⁴ अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान करते रहो। ⁵ (यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का प्रबन्ध कैसे कर पायेगा ?)

⁶ वह एक नया शिष्य नहीं होना चाहिए ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े। ⁷ इसके अतिरिक्त बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़ जाये।

कलीसिया के सेवक

⁸ इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्माननीय होना चाहिए जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो। मदिरा पान में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए। बुरे रास्तों से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिए। ⁹ उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों को थामे रखना चाहिए। ¹⁰ इनको भी पहले निरीक्षकों के समान परखा जाना चाहिए। फिर यदि उनके विरोध में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में सेवाकार्य करने देना चाहिए।

¹¹ इसी प्रकार स्त्रियों को भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निन्दक नहीं होनी चाहिए बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय होनी चाहिए।

¹² कलीसिया के सेवक के केवल एक ही पत्नी होनी चाहिए तथा उसे अपने बाल-बच्चों तथा अपने घरानों का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिए। ¹³ क्योंकि यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्वक स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

¹⁴ मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। ¹⁵ यदि मुझे आने में समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है, किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिए। कलीसिया ही सत्य की नींव और

¹⁶Without a doubt, the secret of our life of worship is great:

Christ* was shown to us in human form;
the Spirit proved that he was right;
he was seen by angels.
The message about him was told
to the nations;
people in the world believed in him;
he was taken up to heaven in glory.

A Warning About False Teachers

4 The Spirit clearly says that in the last times some will turn away from what we believe. They will obey spirits that tell lies. And they will follow the teachings of demons. ²Those teachings come through people who tell lies and trick others. These evil people cannot see what is right and what is wrong. It is like their conscience has been destroyed with a hot iron. ³They say that it is wrong to marry. And they say that there are some foods that people must not eat. But God made these foods, and those who believe and who understand the truth can eat them with thanks. ⁴Everything that God made is good. Nothing he made should be refused if it is accepted with thanks to him. ⁵Everything he created is made holy by what he has said and by prayer.

Be a Good Servant of Christ Jesus

⁶Tell this to the brothers and sisters there. This will show that you are a good servant of Christ Jesus. You will show that you are made strong by the words of faith and good teaching you have followed. ⁷People tell silly stories that don't agree with God's truth. Don't follow what these stories teach. But teach yourself to be devoted to God. ⁸Training your body helps you in some ways. But devotion to God helps you in every way. It brings you blessings in this life and in the future life too. ⁹Here is a true statement

आधार स्तम्भ है। ¹⁶हमारे धर्म के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान है:

मसीह* नर देह धर प्रकट हुआ,
आत्मा ने उसे नेक साधा,
स्वर्गदूतों ने उसे देखा,
वह राष्ट्रों में प्रचारित हुआ।
जग ने उस पर विश्वास किया,
और उसे महिमा में
ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवक्ताओं के उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे और विश्वास से भटक जायेंगे। ²उन झूठे पाखण्डी लोगों के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानो तपते लोहे से दाग दिया गया हो। ³वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिए धन्यवाद देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। ⁴क्योंकि परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाए। ⁵क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

⁶यदि तुम भाईयों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका पालन-पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा के द्वारा होता है जिसे तूने ग्रहण किया है। ⁷बुद्धियाँ की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा परमेश्वर की सेवा के लिए अपने को साधने में लगे रहो। ⁸क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन के लिए दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। ⁹इस बात पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी

3:16 Christ Literally, "who." Some Greek copies have "God."

3:16 मसीह शाब्दिक, "कौन।" कुछ यूनानी प्रतियों में "परमेश्वर" है।

that should be accepted without question: ¹⁰ We hope in the living God, the Savior of all people. In particular, he is the Savior of all those who believe in him. This is why we work and struggle.

¹¹ Command and teach these things. ¹² You are young, but don't let anyone treat you as if you are not important. Be an example to show the believers how they should live. Show them by what you say, by the way you live, by your love, by your faith, and by your pure life.

¹³ Continue to read the Scriptures to the people, encourage them, and teach them. Do this until I come. ¹⁴ Remember to use the gift you have, which was given to you through a prophecy when the group of elders laid their hands on you. ¹⁵ Continue to do these things. Give your life to doing them. Then everyone can see that your work is progressing. ¹⁶ Be careful in your life and in your teaching. Continue to live and teach rightly. Then you will save yourself and those who listen to your teaching.

5 Don't speak angrily to an older man. But talk to him as if he were your father. Treat the younger men like brothers. ² Treat the older women like mothers. And treat the younger women with respect like sisters.

Taking Care of Widows

³ Take care of widows who really need help. ⁴ But if a widow has children or grandchildren, the first thing they need to learn is this: to show their devotion to God by taking care of their own family. They will be repaying their parents, and this pleases God. ⁵ A widow who really needs help is one who has been left all alone. She trusts God to take care of her. She prays all the time, night and day, and asks God for help. ⁶ But the widow who uses her life to please herself is really dead while she is still living. ⁷ Tell the believers there to take care of their family so that no one can say they are doing wrong. ⁸ Everyone should take care of all their own people. Most important, they should take care of their own family. If they do not do that, then they do not accept what we believe. They are

तरह ग्रहण करने योग्य है। ¹⁰ और हम लोग इसलिए कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्ता सजीव परमेश्वर पर टिका दी है।

¹¹ इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। ¹² तू अभी युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू अपनी बात-चीत, चाल-चलन, प्रेम-प्रकाशन, अपने विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिए एक उदाहरण बन जा।

¹³ जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में अपने आप को लगाए रख। ¹⁴ तुझे जो वरदान प्राप्त है, तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप बुजुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख कर दिया गया है। ¹⁵ इन बातों पर पूरा ध्यान लगाए रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के सामने प्रकट हो। ¹⁶ अपने जीवन और उपदेशों का विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों जैसा बर्ताव करो। ² बड़ी महिलाओं को माँ समझो तथा युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के साथ बर्ताव करो।

विधवाओं का देखभाल करना

³ उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में विधवा हैं। ⁴ किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र-पुत्री अथवा नाती-पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे अपने माता-पिताओं के पालन-पोषण का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। ⁵ वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका ध्यान रखने वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही जिसकी आशाओं का सहारा है वह दिन रात विनती तथा प्रार्थना में लगी रहती है। ⁶ किन्तु विषय भोग की दास विधवा जीते जी मरे हुए के समान है। ⁷ इसलिए विश्वासी लोगों को इन बातों का (उनकी सहायता का) आदेश दो ताकि कोई भी उनकी आलोचना न कर पाए। ⁸ किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करता, तो वह विश्वास से फिर

worse than someone who does not even believe in God.

⁹To be added to your list of widows, a woman must be 60 years old or older. She must have been faithful to her husband. ¹⁰She must be known for the good she has done: raising children, welcoming travelers into her home, serving the needs of God's people, helping those in trouble, and using her life to do all kinds of good.

¹¹But don't put younger widows on that list. When their strong physical needs pull them away from their commitment to Christ, they will want to marry again. ¹²Then they will be guilty of not doing what they first promised to do. ¹³Also, these younger widows begin to waste their time going from house to house. They also begin to gossip and try to run other people's lives. They say things they should not say. ¹⁴So I want the younger widows to marry, have children, and take care of their homes. If they do this, our enemy will not have any reason to criticize them. ¹⁵But some of the younger widows have already turned away to follow Satan.

¹⁶If any woman who is a believer has widows in her family, she* should take care of them herself. Then the church will not have that burden and will be able to care for the widows who have no one else to help them.

More About Elders and Other Matters

¹⁷The elders who lead the church in a good way should receive double honor—in particular, those who do the work of counseling and teaching. ¹⁸As the Scriptures say, "When a work animal is being used to separate grain, don't keep it from eating the grain."* And the Scriptures also say, "A worker should be given his pay."*

¹⁹Don't listen to someone who accuses an elder. You should listen to them only if there are

गया है तथा किसी अविश्वासी से भी अधिक बुरा है।

⁹उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो कम से कम साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही हो ¹⁰तथा जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार करते हुए, पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की सहायता करते हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित होकर सब तरह के उत्तम कार्यों के लिए जानी-मानी जाती हो।

¹¹किन्तु युवती-विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे फिर विवाह करना चाहती हैं। ¹²वे अपराधिनी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है। ¹³इसके अतिरिक्त उन्हें आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक घर से दूसरे घर घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल आलसी हो जाती हैं, बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के कामों में टाँग अड़ाने लगती हैं और ऐसी बातें बोलने लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहिए। ¹⁴इसलिए मैं चाहता हूँ कि युवती-विधवाएँ विवाह कर लें और संतान का पालन-पोषण करते हुए अपने घर बार की देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर कटाक्ष करने का कोई अवसर न मिल पाए। ¹⁵मैं यह इसलिए बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान के पीछे चलने लगी हैं।

¹⁶यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं तो उसे उनकी* सहायता स्वयं करनी चाहिए और कलीसिया पर कोई भार नहीं डालना चाहिए ताकि कलीसिया सच्ची विधवाओं को सहायता कर सके।

बुजुर्ग एवं अन्य बातों के बारे में

¹⁷जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहिए। विशेष कर वे जिनका काम उपदेश देना और पढ़ाना है। ¹⁸क्योंकि शास्त्र में कहा गया है, "बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह मत बाँधो।"* तथा, "मजदूर को अपनी मजदूरी पाने का अधिकार है।"*

¹⁹किसी बुजुर्ग पर लगाए गए किसी लांछन को तब तक स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन

5:16 woman ... she Some Greek copies have "man or woman ... he/she."

5:18 Quote from Deut. 25:4.

5:18 Quote from Lk. 10:7.

5:16 महिला ... उनकी कुछ यूनानी प्रतियों में है "महिला या पुरुष ..."

5:18 देखें व्यवस्था. 25:4

5:18 देखें लूका 10:7

two or three others who can say what the elder did wrong. ²⁰Tell those who sin that they are wrong. Do this in front of the whole church so that the others will have a warning.

²¹Before God and Jesus Christ and the chosen angels, I tell you to make these judgments without any prejudice. Treat every person the same.

²²Think carefully before you lay your hands on anyone to make him an elder. Don't share in the sins of others. Keep yourself pure.

²³Timothy, stop drinking only water, and drink a little wine. This will help your stomach, and you will not be sick so often.

²⁴The sins of some people are easy to see. Their sins show that they will be judged. But the sins of some others are seen only later. ²⁵It is the same with the good things people do. Some are easy to see. But even if they are not obvious now, none of them will stay hidden forever.

Special Instructions for Slaves

6 All those who are slaves should show full respect to their masters. Then God's name and our teaching will not be criticized. ²Some slaves have masters who are believers, so they are brothers. Does this mean they should show their masters any less respect? No, they should serve them even better, because they are helping believers, people they should love.

This is what you must teach and tell everyone to do.

False Teaching and True Riches

³Some people will teach what is false and will not agree with the true teaching of our Lord Jesus Christ. They will not accept the teaching that produces a life of devotion to God. ⁴They are proud of what they know, but they understand nothing. They are sick with a love for arguing and fighting about words. And that brings jealousy, quarrels, insults, and evil mistrust. ⁵They are always making trouble, because they are people whose thinking has been confused. They have lost their understanding of the truth. They think that devotion to God is a way to get rich.

गवाहियाँ न हों। ²⁰जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने डॉटो-फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।

²¹परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने मैं सच्चाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना किसी पूर्वाग्रह के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के साथ कोई काम मत कर।

²²बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया बनाने के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी के पापों में भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र रख।

²³केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने हाज़मों और बार-बार बीमार पड़ने से बचने के लिए थोड़ा सा दाखरस भी ले लिया कर।

²⁴कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं और न्याय के लिए प्रस्तुत कर दिए जाते हैं किन्तु दूसरे लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं। ²⁵इसी प्रकार भले कार्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट नहीं होते वे भी छिपे नहीं रह सकते।

दासों के बारे में विशेष निर्देश

6 लोग जो अंध विश्वासियों के जूए के नीचे दास बने हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य समझना चाहिए ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेशों की निन्दा न हो। ²और ऐसे दासों को भी जिनके स्वामी विश्वासी हैं, बस इसलिए कि वे उनके धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम सम्मान नहीं दिखाना चाहिए, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों की ओर अधिक सेवा करनी चाहिए क्योंकि जिन्हें इसका लाभ मिल रहा है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते रहो।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

³यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के उन सद्बचनों को नहीं मानता है तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है ⁴तो वह अहंकार में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह तो कुतर्क करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग से घिरा है। इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा-भाव तथा गाली-गलौज ⁵एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि बिगड़ गयी है, निरन्तर बने रहने वाले मतभेद पैदा होते हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे लोगों का विचार है कि परमेश्वर की सेवा धन कमाने का ही एक साधन है।

⁶Devotion to God is, in fact, a way for people to be very rich, but only if it makes them satisfied with what they have. ⁷When we came into the world, we brought nothing. And when we die, we can take nothing out. ⁸So, if we have food and clothes, we will be satisfied with that. ⁹People who want to be rich bring temptations to themselves. They are caught in a trap. They begin to want many foolish things that will hurt them. These things ruin and destroy people. ¹⁰The love of money causes all kinds of evil. Some people have turned away from what we believe because they want to get more and more money. But they have caused themselves a lot of pain and sorrow.

Some Things to Remember

¹¹But you belong to God. So you should stay away from all those things. Always try to do what is right, to be devoted to God, and to have faith, love, patience, and gentleness. ¹²We have to fight to keep our faith. Try as hard as you can to win that fight. Take hold of eternal life. It is the life you were chosen to have when you confessed your faith in Jesus—that wonderful truth that you spoke so openly and that so many people heard. ¹³Before God and Christ Jesus I give you a command. Jesus is the one who confessed that same wonderful truth when he stood before Pontius Pilate. And God is the one who gives life to everything. Now I tell you this: ¹⁴Do what you were commanded to do without fault or blame until the time when our Lord Jesus Christ comes again. ¹⁵God will make that happen at the right time. God is the blessed and only Ruler. He is the King of all kings and the Lord of all lords. ¹⁶God is the only one who never dies. He lives in light so bright that people cannot go near it. No one has ever seen him; no one is able to see him. All honor and power belong to him forever. Amen.

¹⁷Give this command to those who are rich with the things of this world. Tell them not to be proud. Tell them to hope in God, not their money. Money cannot be trusted, but God takes care of us richly. He gives us everything to enjoy. ¹⁸Tell those who are rich to do good—to be rich in good

६निश्चय ही परमेश्वर की सेवा-भक्ति से ही व्यक्ति सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। ७क्योंकि हम संसार में न तो कुछ लेकर आए थे और न ही यहाँ से कुछ लेकर जा पाएँगे। ८सो यदि हमारे पास रोटी और कपड़ा है तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। ९किन्तु वे जो धनवान बनना चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में फँस जाते हैं तथा उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और विनाशकारी इच्छाएँ घेर लेती हैं जो लोगों को पतन और विनाश ही खाई में ढकेल देती हैं। १०क्योंकि धन का प्रेम हर प्रकार की बुराई को जन्म देता है। कुछ लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही विश्वास से भटक गए हैं और उन्होंने अपने लिए महान दुख की सृष्टि कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

¹¹किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य और सज्जनता में लगा रह। ¹²हमारा विश्वास जिस उत्तम स्पष्टता की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिए संघर्ष करता रह और अपने लिए अनन्त जीवन को अर्जित कर ले। तुझे उसी के लिए बुलाया गया है। तूने बहुत से साक्षियों के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है। ¹³परमेश्वर के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा यीशु मसीह के सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सामने बहस अच्छी साक्षी दी थी, में तुझे यह आदेश देता हूँ कि ¹⁴जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है, तब तक तुझे जो आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना कोई कमी छोड़े हुए निर्दोष भाव से चलता रह। ¹⁵वह उस परम धन्य, एक छत्र, राजाओं के राजा और सम्राटों के प्रभु को उचित समय आने पर प्रकट कर देगा। ¹⁶वह अगम्य प्रकाश का निवासी है। उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है। उसका सम्मान और उसकी अनन्त शक्ति का विस्तार होता रहे। आमीन।

¹⁷वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान बने हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें। अथवा उस धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न रखें। परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकाए जो हमें हमारे आनन्द के लिए सब कुछ भरपूर देता है। ¹⁸उन्हें आज्ञा दे कि वे अच्छे-अच्छे काम करें। उत्तम कामों से ही धनी

works. And tell them they should be happy to give and ready to share. ¹⁹ By doing this, they will be saving up a treasure for themselves. And that treasure will be a strong foundation on which their future life will be built. They will be able to have the life that is true life.

²⁰ Timothy, God has trusted you with many things. Keep these things safe. Stay away from people who talk about useless things that are not from God and who argue against you with a “knowledge” that is not knowledge at all. ²¹ Some people who claim to have that “knowledge” have gone completely away from what we believe. God’s grace be with you all.

बनें। उदार रहें और दूसरों के साथ अपनी वस्तुएँ बाँटें। ¹⁹ ऐसा करने से ही वे एक स्वर्गीय कोष का संचय करेंगे जो भविष्य के लिए सुदृढ़ नींव सिद्ध होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे रहेंगे।

²⁰ तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षा कर। व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो “मिथ्या ज्ञान” से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास हैं, उनसे दूर रह क्योंकि ²¹ कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए विश्वास से डिग गए हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।